बिरसा मुंडा

(जनजातीय गौरव)

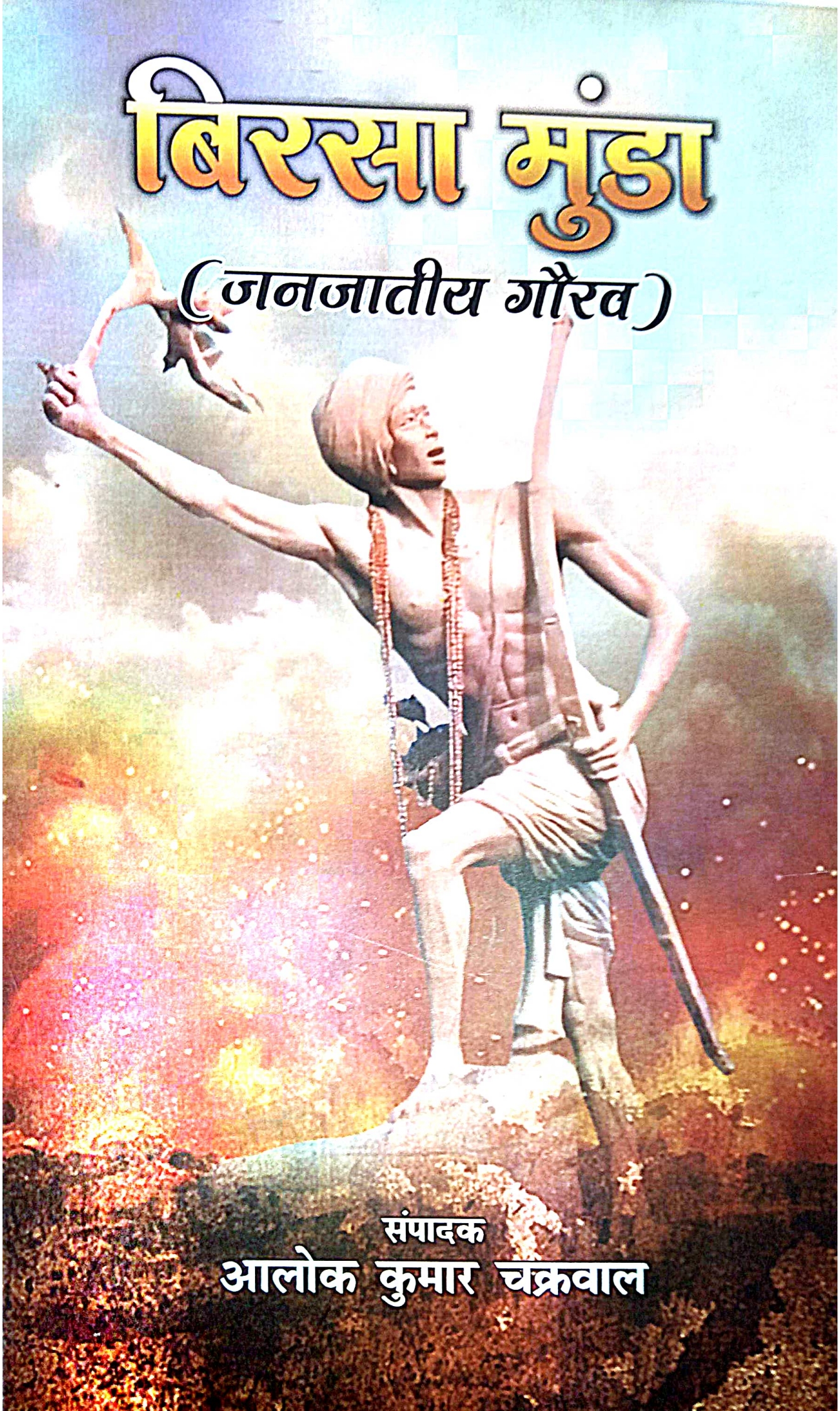

संपादक

आलोक कुमार चक्रवाल

अस्वीकरण

इस पुस्तक में लिखे और व्यक्त किए गए सभी विचार लेखकों के हैं, प्रकाशक किसी भी जानकारी की मौलिकता और पुस्तक में निहित सामग्री या पुस्तक में व्यक्त किए गए विचारों के लिए कोई जिम्मेदारी या दायित्व नहीं मानता है।

शीर्षक : बिरसा मुंडा (जनजातीय गौरव)

सम्पादक: प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल, प्रो. शैलेन्द्र कुमार

© सम्पादक एवं प्रकाशक

संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-90702-70-1

प्रकाशक :

किताववाले

22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग,
अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक :

इन-हाउस (सैल्फ)
नई दिल्ली-110 002

11. भारतीय प्रतिरोध का जननायक : अमर शहीद बिरसा मुण्डा 70
अतुल कुमार मिश्र, सीमा पाण्डेय

12. आदिवासियों के जननायक बिरसा मुंडा तथा उनका धर्म 78
अनिल कुमार ठाकुर

13. ''बिरसाइत'' धर्म के जीवन संस्कार संबंधित प्रथाएँः एक मानवैसानिक अध्ययन 86
शीला पुरती, अबु हुरैरा अंसारी

14. बिरसा मुंडा एवं राष्ट्रवाद 90
प्यारेलाल आदिले, मनहरण अनन्त

15. बिरसा मुण्डा का धार्मिक चिंतन और बिरसा धर्म 96
घनश्याम दुबे, गुलजार सिंह ठाकुर

16. समकालीन भारत में बिरसा मुण्डा और उनके जीवन दर्शन की प्रासंगिकता 101
बिजय प्रकाश शर्मा

17. औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष 109
आशीष कुमार सिंह

18. मुंडा जनजाति में स्वजगारण का द्योतक उलगुलान का स्वरूप 115
अभिषेक कुमार तिवारी, घनश्याम दुबे

19. जनजातियों में स्वचेतना का जागरण : बिरसा मुंडा 122
सीमा पाण्डेय, गोविंद सिंह ठाकुर

20. बिरसा मुंडा : सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन के क्रांतिदूत 127
घनश्याम दुबे, सचिन कुमार

21. औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष 136
आचार्य प्रदीप शुक्ला, अमर नारायण

22. बिरसा मुंडाः दीकु, संघर्ष तथा स्वर्ण युग की संकल्पना 142
प्रदीप शुक्ला, परिवेश कुमार बर्मन

23. आदिवासियों के उत्थान का मसीहा बिरसा मुंडा 153
सीमा पाण्डेय, सुभाष कुमार

24. भारत के प्रतिरोध का इतिहास एवं बिरसा मुंडा 158
गणेश कोशले

15

बिरसा मुण्डा का धार्मिक चिंतन और बिरसा धर्म

घनश्याम दुबे*, गुलजार सिंह ठाकुर**

बिरसा मुण्डा का धर्मिक चिंतन बिरसा धर्म पर पूर्णतः आधारित था। बिरसा बिरसा धर्म के माध्यम से आम जनता से जुड़ना तथा आदिवासीयों में एकता लाने हेतु एक दल के रूप में पहचान दिलाई इस प्रकार बिरसा का राजनितिक और धार्मिक आधार में कोई अन्तर नहीं है। इसने आदिवासी समाज मे प्रचलित परंपराए जिन्हे देखकर और पूर्वजों के बनाए नियमों के पालन से बिरसा ने सहज ही यह महसूस किया कि हमारी संस्कृति बहुत ही महान संस्कृति है। यह समूचे विश्व में एक पृथक संस्कृति है, किन्तु यह श्रेष्ठ तब तक बनी रह सकती है, जब इसमें व्याप्त कुछ बुराइयों को सुधारा जा सके। औपनिवेषिक काल में ईसाई मिशनरी का प्रभाव आदिवासी जीवन समूह पर भर पड़ा। ईसाई मिशनरी और ईसाई धर्म का प्रभाव से भोले भाले आदिवासी अपने संस्कृति से दूर होते जा रहे थे। बिरसा मुण्डा अपने आदिवासी समाज के विकास तथा सांस्कृतिक उत्थान के लिए बिरसा धर्म की स्थापना किया था।

जब सम्पूर्ण जगत ईसाई धर्म प्रचारकों के प्रभाव से अपनी सांस्कृतिक पतन के मार्ग पर बढ़ रहा था, तब बिरसा मुण्डा ने नव उदित रवि के समान मुण्डा आदिवासी समाज पर जागृति की किरण को फैलाने का काम किया। जहां एक तरफ बिरसा आदिवासी परंपराओं को पुनः समाज में स्थापित करना चाहते थे, वहीं वे पुरातन से प्रचलित कुछ परंपराओं में परिवर्तन भी करना चाहते थे, जिससे आदिवासी समाज में विकास हो सके। बिरसा मुण्डा पर सनातन धर्म का प्रभाव भी व्यापक रूप से पड़ा इस कारण समाज सुधार हेतु बिरसा को बिरसा धर्म स्थापित करने की आवश्यकता महसूस हुई। अतः इन उददेश्यों की पूर्ति हेतु ने बिरसा धर्म का स्थापना किया गया।

बिरसा धर्म–बिरसा का शासन और बिरसा का धर्म में कोई ज्यादा अंतर नहीं था। जब

---

* सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर
** शोधार्थी, इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर